युनिवर्सिटी डिपार्टमेंट ऑफ केमिकल टेक्नॉलॉजी। मगर आज विश्वविद्यालय कठिन परिस्थिति में हैं। यह उन हज़ारों छात्रों के लिए चिंता का विषय है जो आई.आई.टी. में प्रवेश नहीं कर पाते या इंजीनियरिंग के अलावा किसी शाखा में आगे बढ़ना चाहते हैं।

यहां एक अन्य मॉडल इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइन्स की बात की जा सकती है। यह संस्था भी धीरे-धीरे अपनी शताब्दी की ओर बढ़ रही है। यहां विज्ञान व इंजीनियरिंग साथ-साथ एक ऐसे माहौल में चलते हैं जो शोध को बढ़ावा देता है। यहां ज़्यादा ध्यान स्नातकोत्तर और शोध उपाधियों पर दिया जाता है। वैसे यह सही है कि एक समय था जब कुछेक आई.आई.टी. में शोध को सम्मानजनक स्थान प्राप्त था। स्वर्ण जयंती एक मौका है जब आई.आई.टी. अनुसंधान के प्रति अपनी निष्ठा को पुनर्जीवित कर सकते हैं।

आज तक आई.आई.टी. ने इंजीनियरिंग क्षेत्र में उत्कृष्ट स्नातक शिक्षा को महत्व दिया है। उनकी सफलता दो बातों पर टिकी है - छात्रों के चयन में कठोरता और प्रशिक्षण की जांची परखी रणनीति। परन्तु चिंता का विषय यह है कि जहां आई.आई.टी. का ब्राण्ड चमक रहा है, वहीं देश में वैज्ञानिक अनुसंधान का आउट पुट घट रहा है।

जयंतियां व बरसियां महत्वपूर्ण होती हैं। इनसे हमें इतिहास पर नज़र डालने और आगे के बारे में सोचने का मौका मिलता है। आई.आई.टी. के संदर्भ में यह समय है जब उन्हें स्नातकोत्तर शिक्षा और अनुसंधान पर ज़ोर देना चाहिए। आशा के कुछ संकेत सामने आए भी हैं। लम्बे समय तक आई.आई.टी. परिसरों से बहिष्कृत जीव विज्ञान अब वहां जड़ें पकड़ रहा है। आने वाले दिनों में कई टेक्नॉलॉजी जीव विज्ञान के बुनियादी शोध में से ही उभरेंगी। लिहाज़ा यह उचित ही है कि हमारे सर्वोत्तम तकनीकी संस्थानों में यह विषय शामिल किया जाए। इस संदर्भ में फेकल्टी का बहुत महत्व होगा। इसलिए इन नए विषयों में नियुक्ति सम्बंधी नीतियों और अनुसंधान को बढ़ावा देना निहायत महत्वपूर्ण है। पूर्व छात्रों द्वारा दिखाई गई रुचि भी उत्साहवर्धक है। आई.आई.टी. ने बिज़नेस, टेक्नॉलॉजी, वाणिज्य और सरकार के लिए कई अग्रणी व्यक्ति दिए हैं। इनमें से कुछ लोग यदि हमारी शैक्षणिक संस्थाओं को लेकर गंभीरता से विचारे करें, तो शायद इस क्षेत्र में एक व्यापक पुनर्जागरण संभव है। *(स्रोत विशेष फीचर्स)*

प्रवासी भारतीय और विज्ञान

पी. बालाराम

विकासशील देशों से प्रशिक्षित लोगों का पलायन लगभग 50 वर्षों से जारी है। यह पलायन आम तौर पर उत्तरी अमरीका की ओर होता है, जहां के ढोल ज़्यादा सुहावने हैं। धीमी गति से होने वाला पलायन धीरे-धीरे एक सैलाब में बदल गया है। कई वैज्ञानिक और इंजीनियर्स आगे की पढ़ाई या पोस्ट डॉक्टरल अनुसंधान के लिए जाते हैं और वहीं के होकर रह जाते हैं। उनके मूल देश को उनका कोई लाभ नहीं मिल पाता। इस तरह से तकनीकी रूप से हुनरमंद मानव संसाधन का दक्षिणी देशों से उत्तरी देशों में पलायन 'ब्रेन ड्रेन' या 'प्रतिभा पलायन' कहलाता है। पिछले वर्षों में भारत इस 'प्रतिभा पलायन' का प्रमुख स्रोत रहा है।

भारत से पश्चिम की ओर प्रवासियों की संख्या जब काफी हो गई तो अनिवासी भारतीयों के एक बड़े समूह के अस्तित्व को लेकर जागरूकता पैदा हुई। आज अकेले संयुक्त राज्य अमरीका में कई लाख अनिवासी भारतीय मौजूद हैं। वैसे देखा जाए तो यह समूह लगभग सभी महाद्वीपों में फैला हुआ है।

तुलनात्मक रूप से देखें तो संख्या कोई बहुत ज़्यादा नहीं है - मात्र 2 करोड़ अनिवासी भारतीय विभिन्न देशों में हैं जबकि हमारी कुल आबादी एक अरब से ज़्यादा है। मगर